स्त्री पद्य

पुस्तक—सुनो चारूशीला; लेखक—नरेश सक्सेना

कविता (घास)

बस्ती वीरानों पर यकसां फैल रही है घास
उससे पूछा क्यों उदास हो कुछ तो होगा ख़ास

कहाँ गये सब घोड़े अचरज में डूबी है घास
घास ने खाये घोड़े या घोड़ों ने खायी घास।

सारी दुनिया को था जिनके कब्ज़े का अहसास
उनके पते ठिकानों तक पर फैल चुकी है घास

धरती पानी की जाई सूरज की ख़ासमख़ास
फिर भी क़दमों तले बिछी कुछ कहती है यह घास

धरती भर भूगोल घास का तिनके भर इतिहास
घास से पहले, घास यहाँ थी, बाद में होगी घास।

स्त्री गद्य

पुस्तक–जाति ही पूछो साधु की; लेखक–विजय तेन्दुलकर

नलिनी : (जैसे टेपरिकॉर्डर बोल रहा हो) मैं पैंचान भी नई दिखाऊँगी। मैं तुमैं भूलने की कोसस करूँगी। मेरी सगाई होने वाली हैंगी। घरवालों ने मेरैं लिए लड़का ढूँढा हैगा। ऊका खानदान भी ऊँचा हैंगा। और हमाई जातई का हैगा। माता–पिता की आग्यानुसार ल्याए लड़के सैं शादी करना हर बेटी का कर्तव्य हैंगा। ऊई मैं बिटिया का कल्यान होता हैंगा तथा तथा खानदान की सान भी रैती हैंगी। मेरी ससुरालवाले बड़े आदमी हैंगै। मेरा भावी पती अच्छा हैंगा और खानदानी हैंगा। मेरा ससुर रईस हैंगा। हमारे हुँआँ भी हवेली हैंगी। हवेली मैं नौकर–चाकर हैंगे। पाँच दुधारू चौपाए और छै बैल हैंगे। अलावा, पचास एकड़ जिमीन हैगी। हुँआँ सिरिफ हमइयई जिमीन पै टिरैक्टर चलता हैगा। मेरा ससुर पंचायत का मिम्बर हैगा और पतिदेव की जिले के एमेले साब तक पौंच हैगी। दस–बीस मील कैं घेरे में हमाई ससुराल के जोड़ का कोई खानदान मिलै त नाक कटवा लैं। ऐसा घर मुजैं मिल रिया हैगा, येई मेरा सौभाग हैगा। ऐंसै घर पौंच कैं मुजै भौत सुख मिलैंगा............

<u>स्त्री गद्य</u> (उर्दू)

पुस्तक–यहूदी की लड़की; लेखक–आगा़ हश्र काशमीरी

राहील : नहीं, नहीं, नारी का नाम नहीं हंसाऊंगी। मरदों को यह कहने का अवसर न दूंगी किएक रोमन शहजादी ने सर झुकाया और एक घमंडी यहूदन ने रहम न खाया ! उठो शहजादी, उठो। हालांकि मै। इसमें अपनी उचित प्रशंसा न पाऊंगी, मगर तुम्हारे इस रोने–धोने को देखकर जफ़ा पर भी वफ़ा दिखाऊंगी। सरकार, आओ, खौफ़ न खाओ। जब मेरा जिस्मे–पाक खाक में मिल जाय और वेवफ़ा दुनिया हमारी क़ौम की खुदगर्ज बताये, उस वक्त तुम पुकारकर कह देना कि भग्नहृदय–राहील यद्यपि यहूदी थी, मगर सच्ची वफ़ादार और प्यार की सदाबहार गुलशन थी !